NAME : NEERAJ MANDLOI नीरज मंडलोई
DATE : 10 NOV 2020 निबंध पेपर- 6

1 B.

"महिला घरेलू हिंसा व सशक्तिकरण"

लक्ष्मी एक 30 वर्षीय महिला है। उसकी शादी 15 साल में ही हो गई थी, उसके दो बच्चे हैं। उसका पति, पास की फैक्ट्री में दैनिक मजदूरी करता है। लक्ष्मी के बांए हाथ पर चोट लगी दुई और कई चोट के निशान हैं जो कहीं गिरने से या दुर्घटना से नहीं लगे हैं, उसकी पति की मार के निशान हैं। वह सुबह उठकर बच्चों के लिए टिफिन तैयार करती है, घर सफाई करती है, खाना बनाती है, बूढ़े सास-ससुर की सेवा करती है, बर्तन, कपड़े फिर शाम का खाना और फिर पति की गाली, मार, उसकी दिनचर्या की है। दुर्भाग्यवश वह कुछ नहीं कर सकती, कर सकती है तो वह प्रर्थना और उसके बच्चों के बड़े होने का इंतजार। जब तक इस बर्बरता को सहना ही उसकी नियति है, वह यह मान चुकी है। उसके बच्चे भी डरे सहमे रहते हैं। उसका पति कभी-कभी बच्चों को भी बुरी तरह मारता है।

लक्ष्मी जैसी जाने कितनी महिलाएं हैं जो ये कष्ट झेल रही हैं। एक घर के अंदर बंद, चुपचाप, बिना किसी से कुछ कहे ये अमानवता सहती जा रही हैं।

और कभी-कभी ये प्रताड़ना इतनी बढ़ जाती है कि वे आत्महत्या जैसे कदम उठा लेती हैं, नहीं तो मानसिक रूप से बिमार हो जाती हैं। यह न केवल गरीब अपितु प्रायः हर वर्ग में देखा जा सकता है। बच्चे अपनी कम उम्र में ऐसा माहौल पा कई बार अपराध का दामन थाम लेते हैं। आखिर ऐसा हो क्यूँ है? ~~क्यों~~ क्यूँ महिलाएँ ये सब सहती हैं? क्यूँ ये प्रताड़नाएँ होती हैं? समाज इसपर मौन क्यूँ बना रहता है?

घरेलू हिंसा के कारण तो अनेक हैं पर उनमें मुख्य है ~~महिला का~~ जैसे गरीबी, सहारता की कमी, नशा, पुरुष प्रधान समाज आदि परन्तु मुख्य है कि महिलाएं ये सब सहन करती हैं और इसके लिए कुछ नहीं करती। शायद इसलिए की उनके बच्चे छोटे हैं, और आर्थिक रूप से वे इतनी सशक्त नहीं हैं कि वे बच्चों का ध्यान रख सके, या महिलाओं के घर वाले भी उसे यह सब सहने के सलाह देते हैं, उसकी मदद नहीं करते। घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 के तहत तहत वह शिकायत भी कर दे तो शिकायत के बाद उसे आना तो वहीं है और फिर और अधिक उत्पीड़न न बढ़ जाये उसकी डर।

घरेलू हिंसा के प्रभाव : घरेलू हिंसा के मुख्य दुष्प्रभावों में से एक है, महिला का आत्महत्या कर लेना। एक रिपोर्ट से हमें ये पता चलता है की प्रति दिन 28 महिला घरेलू कारणों की वजह से प्राण त्याग देती हैं। उन्हें जीवन से अधिक सरल मर जाना लगता है।

जो मार मर नहीं पाती जो मानसिक रोगी हो जाती है, और हमारे समाज में मानसिक रोग की का इलाज तो दूर, कोई बात तक नहीं करता। ज्यादा ही है तो किसी बाबा की भभूत लगा दी। झाड़-फूंकी करा दी। उन्हें डर होता है कि समाज क्या कहेगा कि हमारी घर की बहु पागल हो गई। और ये सच भी है समाज ये करता भी है। उन्हें पागल कहता है। जग हंसाई करता है। और फिर कई बार इलाज मंहगा होने पर या डॉक्टर की कमी कारण भी इलाज ले नहीं लिया जाता।

महिलाओं आत्म विश्वास की कमी हो जाती है, वे दब्बू, कमजोर बन जाती हैं। क्योंकि घर में लगातार उन्हें बोला जाता है कि तुम किसी काम

की नहीं हो। तुम पुरुष हो, तुम्हें लोगों से बात करना नहीं आता। और वे आम किरदार खो देती हैं।

घरेलू हिंसा न केवल एक बर्बरता बल्कि एक पाप भी है जो उनसे, उनकी अधिकार और उनके जीवन में आगे बढ़ने के सपने छीन लेती है। वे अपना सारा जीवन इसी जद्दोजहद में गुजार देती हैं कि आज कुछ डाँट या मार न पड़े। वे कुछ हासिल करने का तो सोच भी नहीं सकतीं।

घरेलू हिंसा का बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। जैसे वे डरे-डरे रहते हैं, पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते, मानसिक तनाव के चलते वे उनका अच्छा विकास नहीं हो पाता। उनमें दुर्भावना भर जाती है। कभी-कभी बच्चे भी ये सीख जाते हैं कि महिलाओं को मारना तो आम बात है और हमारा अधिकार है।

कुछ प्रभाव जैसे- शारीरिक कमजोरी, आहार अच्छे-से नहीं ले पाना, घबराहट होना आदि भी घरेलू हिंसा द्वारा समाज घरों में आ जाते हैं।

उपाय : घरेलू हिंसा को रोकने का सबसे अच्छा व सतत उपाय है महिलाओं का सशक्तिकरण।

महिला सशक्तिकरण, उन्हें शिक्षा देकर, जागरूक बनाकर और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाकर, हासिल कर सकते हैं।

महिलाएँ हिंसा सहती हैं क्योंकि वे आर्थिक रूप से निर्भर हैं यदि वे काम करें, अच्छा वेतन पायें तो वे नहीं सहेंगी। इनके लिए हमें सुनिश्चित करना होगी, अच्छी शिक्षा, रोजगार के अवसर, कार्यस्थल पर महिला सुरक्षा, आदि।

सशक्तिकरण के और भी उपाय हैं जैसे महिलाओं का प्रतिनिधित्व में आरक्षण बढ़ना, पुलिस बल में महिलाओं का अधिक भर्ती, शिक्षा हेतु भिन्न योजना, जिससे वे कम व्यय में शिक्षा प्राप्त कर सकें।

भारत में महिलाएँ सशक्त हो रही हैं हमें प्र
दिन-प्रतिदिन उनकी कोई न कोई
हासिल उपलब्धियों के बारे में सुनने मिलता है
जैसे इसरो के मंगल मिशन में महिला ही उसका
प्रतिनिधित्व करने वाली थी। खेल में भारत को
पहला चाँदी पी.वी. सिंधु ने दिलाया, महिलाएँ
न केवल खेल में बल्कि अंतरिक्ष में, वाणिज्य
में, अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपना परचम
लहरा रही हैं।

वे अपनी आसमान खुद हासिल कर
लेंगी हमें जरूरत है तो उनकी पंख खोलने
की।

कोफी अन्नान ने कहा था कि "विकास के
लिए महिलाओं के सशक्तिकरण से बेहतर कोई
भी उपकरण नहीं है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:"

A. "नैतिक मूल्य और आवश्यकता"

नैतिक मूल्य, वे आचरण होते हैं जो हमें समाज में सही व्यवहार, उचित निर्णय व मानव मूल्यों को बताते हैं। जैसे बड़ों का आदर, छोटों से प्रेम, राष्ट्र के प्रति ईमानदार व सत्यनिष्ठ। नैतिक मूल्यों का भारतीय परम्परा में एक प्रमुख स्थान है। एक व्यक्ति की परख उसके नैतिक मूल्यों के आधार पर ही की जाती है। हमारे धर्म ग्रन्थों का सार लें तो वह यही है कि एक सरल, सहज जीवन जीना, सहज व्यवहार का होना अपने राष्ट्र पर समर्पित होना और सत्य व अहिंसा के पथ पर बने रहना।

नैतिक मूल्य कैसे व्यक्तित्व में आते हैं? : परिवार द्वारा, समाज द्वारा, राज्य द्वारा व स्वयं के अनुभवों द्वारा। हम जो देखते हैं, जो सोचते हैं, हम उसका प्रतिबिंब होते हैं। नैतिक मूल्यों का विकास मुख्यतः कम उम्र में ही हो जाता है। बच्चें परिवार के मूल्यों से अपने मूल्य बनाते हैं। इसलिए जरूरी है, अच्छी शिक्षा का देना, पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा जैसे विषयों का होना।

आवश्यकता : आये दिन हम देखते हैं कि समाज में अपराध, अमानवीय कृत्य, दुराचार, आदि बढ़ बढ़ते जा रहे हैं। इसका मूल कारण है नैतिकता का क्षय। नैतिक मूल्यों की आवश्यकता हमें सामाजिक स्तर पर भी है और निजी स्तर पर भी।

यदि नैतिक मूल्य हमारे समाज में हैं तो समाज में अपराध कम होंगे और हम एक न्याय प्रिय समाज की ओर अग्रसर होंगे।

• प्रशासनिक सेवा में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता: प्रशासन और जनता के बीच की कड़ी होती है प्रशासनिक सेवा। यह बहुत आवश्यक है कि प्रशासनिक सेवक ईमानदार, सत्यनिष्ठ, पारदर्शी, हो। उसमें गरीब वर्ग के प्रति करुणा, सहनशीलता और सद्भावना हो।

बिना नैतिक मूल्यों के मानव सभ्यता, सभ्यता हो ही नहीं सकती है। हमे ये सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षा में नैतिक मूल्यों का विकास हो।

नैतिक मूल्य कितने आवश्यक हैं कि इसका पता इससे ही चलता है कि विश्व के बड़े-बड़े संस्थानों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य है। भारत में भी प्रशासनिक सेवा परीक्षा व प्री प्रशिक्षण में इसका विषय ध्यान रखा जाता है।

भारतीय मूल्य हमें सहिष्णु, सत्यनिष्ठ व सदाचारी बनने की सीख देते हैं। हमारी संस्कृति में हर कण में ईश्वर को माना गया है, इसका तात्पर्य है कि हम जानवर, इंसान और हर प्राणी का आदर करें और अपना कर्तव्य ईमानदारी से करें।

3. c. "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"

यह पंक्ति गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित "रामचरितमानस" से ली गई है। इसका शाब्दिक अर्थ है "पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं होता है।"

यह एक गूढ़ बात है जो स्वयं में कई मूल्यों को समेटे है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय कई स्वतंत्रता सेनानियों ने इसे समझा और इसका प्रचार किया। कि भारत एक गुलाम देश था और जब तक हमें स्वतंत्रता नहीं मिल जाती, सुख की कल्पना करना भी व्यर्थ है।

एक व्यक्ति जो किसी अधीन है वह कैसे आराम और सुख के बारे में सोच सकता है। इसी मंत्र को मन में धारण किया हमारे देश के वीरों ने अपनी पूरी जिंदगी हमें आजादी दिलाने में लगा दी।

अब ये हमारा कर्तव्य है कि हम उनके बलिदान को साकार रूप दें। भारत आज आजाद मुल्क है परन्तु क्या हम आज भी संपूर्ण सुख की कल्पना कर सकते हैं? एक ऐसा सुख जो सबमें व्याप्त हो। एक ऐसा समाज जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सुखी हो। आज भी हमें अपने ही देश की भीतर की पराधीनता से लड़ने की आवश्यकता जैसे गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अपराध, भ्रष्टाचार आदि।

गोस्वामी तुलसीदास जी की एक चौपाई है कि "दैहिक, भौतिक, दैविक तापा, राम राज नहिं काहुई व्यापा।" अर्थात् एक ऐसा समाज जहाँ किसी भी प्रकार का दुख, किसी भी प्राणी को न हो। और तब तक हमें प्रयासरत ही रहना है, एक ओर इसे सब ईश्वर का कार्य मान कर कार्य करना है।

"राम काजु किन्हें बिना, मोहे कहाँ विश्राम।"